School of Social Science

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक-आर्थिक लोकतन्त्र सम्बन्धी चिन्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** (**"DR. BHIMRAO AMBEDKAR KE SAMAJIK-AARTHIK CHINTAN KA VISHLESHANAATMAKA ADHYAYAN"**) being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Political Science under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Trivikram Tiwari and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Ambuj Pandey

En. No.: **2100601**

Research Supervisor

Dr. Trivikram Tiwari
Faculty of Political Science

22/5/2025

Prof. Santosha Kumar
Director, School of Social Sciences

22/05/25

Prof. P. K. Pandey
Director, R&D Cell

Scanned with OKEN Scanner

"डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक-आर्थिक लोकतन्त्र सम्बन्धी चिन्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

"Dr. Bhimrao Ambedkar ke Samajik-Aarthik Chintan ka Vishleshnatmaka Adhyayan"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN POLITICAL SCIENCE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Ambuj Pandey
En 2100601

Under the Supervision of

Dr. Trivikram Tiwari

Faculty of Political Science

School of Social Science
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Scanned with OKEN Scanner

सारांश (Abstract):

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर (1891–1956) प्रतिष्ठित भारतीय विधिवेत्ता, राजनीतिक विचारक, दार्शनिक चिन्तक, मानवविज्ञानी, इतिहासकार, प्रखरवक्ता, प्रख्यात लेखक, अर्थशास्त्री, विद्वान सम्पादक, क्रांतिकारी और स्वतंत्र भारत के निर्माताओं में से एक थे। अन्य भारतीय राष्ट्रीय नेताओं की तरह उन्हें भी लोकतंत्र पर पूर्ण विश्वास था। अम्बेडकर ने लोकतंत्र को एक ऐसा साधन माना, जो बिना किसी विवाद और रक्तपात के समाज में तीव्र गति से परिवर्तन लाता है।' उन्होंने लोकतंत्र को केवल बहुमत की सरकार का शासन नहीं माना। उनके लिए यह लोकतंत्र की औपचारिक और सीमित धारणा थी। उन्होंने इसे सरकार की एक प्रणाली से ज्यादा विस्तृत रूप में देखा और समाज के हर क्षेत्र में लोकतंत्र लाने की आवश्यकता पर बल दिया। किसी भी सरकार की प्रणाली शून्य या निर्वात में कार्य नहीं करती। इसकी उपयोगिता समाज के अन्य क्षेत्रों से इसके सम्बंध पर आधारित होती है। राजनीतिक लोकतंत्र का अर्थ है 'एक व्यक्ति एक वोट का सिद्धान्त' जो राजनीतिक समानता को इंगित करता है। लेकिन यदि समाज में उत्पीड़न, अन्याय और शोषण विद्यमान है, तो राजनीतिक लोकतंत्र अपने शब्द और भावना के साथ कार्य नहीं कर पायेगा। इसीलिए एक लोकतांत्रिक सरकार ऐसी होना चाहिए जो लोकतांत्रिक समाज का विस्तार करें।

लोकतन्त्र के सामाजिक आधारों के साथ अम्बेडकर ने इसके आर्थिक आयामों पर भी विचार किया। हालांकि वे उदारवादी विचारधारा से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने इसके आर्थिक पक्ष की तार्किक आलोचन भी की। उन्होंने तर्क दिया कि संसदीय लोकतंत्र उदारवाद पर आधारित था, जो आर्थिक असमानताओं को अनदेखा करता है और कभी भी समाज के वंचित व शोषित वर्ग की समस्या पर ध्यान नहीं देता। अम्बेडकर ने सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के विचार को बढ़ावा दिया। जिसका विस्तृत विवेचन समाज के प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग के लिए उपयोगी है।

मुख्य शब्द: लोकतंत्र, राजनीतिक लोकतंत्र, सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र, उदारवाद, समानता, स्वतंत्रता।

Ambuj Pandey

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

S. No	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11
	References	
	Plagiarism Report	

Scanned with OKEN Scanner

1. प्रस्तावना

डॉ० भीमराव अम्बेडकर (1891–1956) जिन्हें बाबासाहेब के नाम से भी जाना जाता है। डॉ0 अम्बेडकर प्रतिष्ठित भारतीय विधिवेत्ता, राजनीतिक विचारक, दार्शनिक चिन्तक, मानव विज्ञानी, इतिहासकार, प्रखरवक्ता, प्रख्यात लेखक, अर्थशास्त्री, विद्वान सम्पादक, क्रांतिकारी और स्वतंत्र भारत के निर्माताओं में से एक थे। वे भारतीय संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष भी थे।

अन्य भारतीय राष्ट्रीय नेताओं की तरह उन्हें भी लोकतंत्र पर पूर्ण विश्वास था। अम्बेडकर ने लोकतंत्र को एक ऐसा साधन माना, जो बिना किसी विवाद और रक्तपात के समाज में तीव्र गति से परिवर्तन लाता है।' उन्होंने लोकतंत्र को केवल बहुमत की सरकार का शासन नहीं माना। उनके लिए यह लोकतंत्र की औपचारिक और सीमित धारणा थी। उन्होंने इसे सरकार की एक प्रणाली से ज्यादा विस्तृत रूप में देखा और समाज के हर क्षेत्र में लोकतंत्र लाने की आवश्यकता पर बल दिया। किसी भी सरकार की प्रणाली शून्य या निर्वात में कार्य नहीं करती। इसकी उपयोगिता समाज के अन्य क्षेत्रों से इसके सम्बन्ध पर आधारित होती है। राजनीतिक लोकतंत्र का अर्थ है 'एक व्यक्ति एक वोट का सिद्धान्त' जो राजनीतिक समानता को इंगित करता है। लेकिन यदि समाज में उत्पीड़न, अन्याय और शोषण विद्यमान है, तो राजनीतिक लोकतंत्र अपने शब्द और भावना के साथ कार्य नहीं कर पायेगा। इसीलिए एक लोकतांत्रिक सरकार ऐसी होना चाहिए जो लोकतांत्रिक समाज का विस्तार करें। उदाहरण के लिए भारतीय समाज में जहाँ लम्बे समय से जातिगत बाधाएँ व जाति आधारित भेद–भाव अस्तित्व में है, वास्तविक लोकतंत्र का कार्यरूप लेना बहुत कठिन है। इस रूप में लोकतंत्र का अर्थ भ्रातृत्व और समानता की भावना से है न कि केवल एक राजनीतिक प्रणाली। भारत में लोकतंत्र की सफलता केवल एक वास्तविक लोकतांत्रिक समाज की स्थापना के द्वारा ही सुनिश्चित की जा सकती है।

लोकतन्त्र के सामाजिक आधारों के साथ अम्बेडकर ने इसके आर्थिक आयामों पर भी विचार किया। हालांकि वे उदारवादी विचारधारा से प्रभावित थे, लेकिन उन्होंने इसके आर्थिक पक्ष की तार्किक आलोचन भी की। उन्होंने तर्क दिया कि संसदीय लोकतंत्र उदारवाद पर आधारित था, जो आर्थिक असमानताओं को अनदेखा करता है और कभी भी समाज के वंचित व शोषित वर्ग की समस्या पर ध्यान नहीं देता। दूसरे शब्दों में कहे, तो पश्चिमी प्रतिमान वाले लोकतंत्र सामाजिक और आर्थिक असमानता के मुद्दे की उपेक्षा करते रहे हैं।

Scanned with OKEN Scanner

संसदीय लोकतंत्र केवल स्वतंत्रता पर जोर देता है, जबकि वास्तविक लोकतंत्र स्वतंत्रता और समानता दोनों को महत्त्व देता है। यह विश्लेषण भारतीय संदर्भ में और भी ज्यादा प्रासंगिक हो जाता है। भारतीय समाज अंग्रेजों से आजादी की मांग कर रहा था, लेकिन अम्बेडकर को इस बात का डर था कि केवल देश की स्वतंत्रता सभी लोगों की वास्तविक स्वतंत्रता को सुनिश्चित नहीं पर पायेगी। सामाजिक और आर्थिक असमानता ने भारतीय समाज के मानवीय पक्ष को काफी नकसान पहुँचाया है। ऐसे समाज में पूर्ण लोकतंत्र की स्थापना करना एक आंदोलन या क्रांति से कम कुछ भी नहीं है। यह सामाजिक संरचना के साथ लोगों की अभिवृत्तियों में भी एक क्रांति होगी। आनुवांशिक असमानता के स्थान पर भ्रातृत्व और समानता के सिद्धान्त को स्थापित किया जाना चाहिए। इसीलिए अम्बेडकर ने सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के विचार को बढ़ावा दिया। जिसका विस्तृत विवेचन समाज के प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग के लिए उपयोगी है।

2. संबंधित साहित्य का अनुशीलन

शोध विषय से सम्बंधित साहित्य के पुनरीक्षण की आवश्यकता इसलिए पड़ती है क्योंकि इससे यह पता चल सकता है कि पूर्व के साहित्य व शोधों में सम्बंधित शोध समस्या पर किस प्रकार का कार्य किया गया है, उसके किस पक्ष पर ज्यादा जोर दिया गया है और किस पक्ष की उपेक्षा की गयी है या किस पर कम ध्यान दिया गया है। इससे शोधार्थी का सैद्धांतिक ज्ञान तो पुष्ट होता ही है, साथ ही उसकी जिज्ञासाओं की भी संतुष्टि होती है। मैंने इसी बात का ध्यान देते हुए निम्न सम्बन्धित साहित्य का पुनरीक्षण किया, जिसका विवरण इस प्रकार है–

(1) सी० एन0 लाजो ने अपनी पुस्तक डॉ० अम्बेडकर : लोकतंत्र की महिमा में अम्बेडकर के लोकतंत्र सम्बन्धी विचारों को व्यक्त किया है तथा लोकतंत्र में जनता की भागीदारी व व्यक्ति व व्यक्ति की महत्ता पर भी प्रकाश डाला है।

(2) एम० एस० गौर ने The Social Context of an Ideology: Ambedkar's Political & Social Thought (1995) में अम्बेडकर के सामाजिक और राजनीतिक विचारों को व्यक्त किया है। इस पुस्तक में लेखक ने अम्बेडकर के सामाजिक उत्थान हेतु किए गए संघर्ष को विषेष रूप में उभारा है।

(3) डॉ० डी0 आर0 जाटव ने अपनी पुस्तक "Politics of B. R. Ambedkar in National Movement (2000) में अम्बेडकर के राजनीतिक क्रियाकलाप का अध्ययन किया तथा राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी पर भी विशेष प्रकाश डाला है।

Scanned with OKEN Scanner

(4) Valerian Rodrigues ने अपनी पुस्तक "The Essential writting of B. R. Ambedkar (2002)" में धर्म, लोकतंत्र, जाति व वर्ग के बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों को प्रमुखता से रखा है।

(5) सी0 डी0 नायक ने अपनी पुस्तक "Social and Political thought of Dr. B. R. Ambedkar" में अम्बेडकर के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का अध्ययन किया व सामाजिक व्यवस्था के साथ राजनीतिक व्यवस्था में क्या सुधार लाये जाने चाहिए उस पर प्रकाश डाला है।

(6) डॉ० आर० पी० राज : The underrated leader: Ashort Biography on Dr-Ambedkar. (2019).

(7) सुखदेव थोराट और नरेन्द्र कुमार : Dr.- B.R. Ambedkar perspective on Social exclusion and inciusive policies (2009).

(8) सुखदेव थोराट : Ambedkar in Retrospect : Essays on economics, Politics and soceity (2007).

(9) डॉ0 एम0 एल0 सहारे, डॉ0 नलिनी अनिल : बाबा साहेब अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा और संदेश : (2014).

(10) विनय बर्मन : Ambedkar's thought on Dalits, Politics and women empowerment (2007).

उपर्युक्त विषय से सम्बंधित इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात् ही मैंने अपने शोध विषय का चुनाव किया, ताकि जो विषय समकालीन भारतीय समाज के लिए महत्त्वपूर्ण व प्रासंगिक है, उसी को आधार बनाया जाये। इसी क्रम में मैंने पाया कि हमारे देश की एक प्रमुख समस्या सामाजिक–आर्थिक असमानता है, जो देश में लोकतंत्र को व्यावहारिक रूप देने के अतिरिक्त उसे मूल स्तर तक पहुँचाने में एक प्रमुख अवरोध के रुप में कार्य कर रहा है। इसीलिए इन ग्रंथों के अनुशीलन के पश्चात् अपने विषय **"डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक–आर्थिक लोकतंत्र सम्बंधी चिन्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** का चुनाव किया जिससे डॉ० अम्बेडकर के विचारों और सिद्धांतों का एक नवीन दृष्टि के साथ अध्ययन व विश्लेषण किया जा सके और जो विसंगतियाँ व समस्याएँ समकालीन भारत में विद्यमान है उसे एक विवेकशील सीमा तक दूर करने की अन्तर दृष्टि मिल सके।

3. विस्तृत विवरण क्षेत्र

प्रस्तुत शोध की प्रमुख समस्या समकालीन भारतीय शासन प्रणाली और राजनीतिक नेतृत्व के चिंतन तथा कार्यप्रणाली में सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में लोकतंत्र की स्थापना को पर्याप्त महत्त्व न

Scanned with OKEN Scanner

दिये जाने से सम्बंधित है। तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों पर एक सूक्ष्म दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि अम्बेडकर की यह मान्यता बिल्कुल सही थी कि बिना सामाजिक व आर्थिक लोकतंत्र के राजनीतिक लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। हमारा लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन साथ ही यह भी सत्य है कि यह उतनी ही विसंगतियों और विरोधाभासों से भरा हुआ है, क्योंकि हम आज तक वंचित, कमजोर व हाशिए पर रहने वाले समुदायों को वांछित जीवन स्तर नहीं प्रदान कर पाये। आज विश्व के तीसरे सबसे ज्यादा अरबपति हमारे देश में है, वहीं विश्व की लगभग एक तिहाई गरीब जनसंख्या भी हमारे देश में रहती है।

हमारे देश में जहाँ राजनीतिज्ञ धर्म और जाति का प्रयोग ज्यादा वोट और सीट पाने के लिए करते हैं, जहाँ भ्रष्टाचार व्यवस्था के साथ अन्तर मिश्रित हो गई हो, जहाँ गरीब और अमीर के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही हो, राजनीति का अपराधीकरण बढ़ता जा रहा हो, न्याय महंगा और देर से मिल रहा हो, और निचले तबके पर उनके उभार के साथ–साथ अत्याचार भी बढ़ते जा रहे हो, वहाँ सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में लोकतंत्र की स्थापना ही आशा की किरण जगाती है।

प्रस्तुत शोध की दूसरी प्रमुख समस्या इस बात से सम्बन्धित है कि राजनीति विज्ञान विषय के अन्तर्गत लोकतंत्र से सम्बन्धित जो भी चिंतन और शोधकार्य हो रहे हैं, वह मुख्यतः नव उदारवादीधारा से सम्बन्धित है, जिसमें लोकतंत्र के लिए केवल स्वतंत्रता को ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है और समानता की धारणा के महत्त्व को नजरअंदाज कर दिया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य लोकतंत्र के गहन अर्थ को समझने और उसके आदर्श रूप को रेखांकित करने के लिए अम्बेडकर के सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की प्रासंगिकता का अध्ययन करेगा।

भारतीय सामाजिक और आर्थिक जीवन में लोकतंत्र की स्थापना में सफलता न मिलने का ही यह परिणाम है कि हमारे सामाजिक व आर्थिक जीवन में इतने विरोधाभास देखने को मिलते हैं। किसानों को सैकड़ों किलोमीटर की पदयात्रा निकालकर भी कर्जमाफी नहीं मिलती और इस देश के उद्योगपतियों का लाखों–करोड़ों का कर्ज माफ कर दिया जाता है और कुछ तो देश के बैंकों से आम जनता का पैसा लेकर विदेश भाग जाते हैं। जहाँ एक तरफ अरबपतियों की संख्या देश में लगातार बढ़ती जा रही है, लेकिन साथ ही हम मानव विकास सूचकांक में निम्न स्थान पर बने हुए हैं। एक तरफ अमीर कॉरपोरेटों की सब्सिडी जहाँ बढ़ती जा रही है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक क्षेत्र का खर्च लगातार घटता जा रहा है और उससे भी चिंताजनक बात यह है कि यह सब राष्ट्रीय वाद–विवाद के मुद्दों की मुख्य धारा में भी शामिल नहीं किये जा रहे हैं।

Scanned with OKEN Scanner

इन सारे विराधाभासों का एक प्रमुख कारण यह है कि हम देश के नागरिकों को एक विकास के लिए समान अवसर नहीं प्रदान कर पाये हैं। इस विकास के लिए समान अवसर प्रदान करने हेतु सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में लोकतंत्र की प्रासंगिकता का अध्ययन अत्यधिक लाभप्रद होगा।

4. शोध का उद्देश्य

किसी भी शोध का उद्देश्य वस्तुतः शोध समस्या के साथ प्रत्यक्ष रूप से अन्तर सम्बंधित होता है। ठीक उसी प्रकार प्रस्तावित शोध कार्य का सामान्य उद्देश्य समकालीन भारत की लोकतांत्रिक संरचना के सामाजिक व आर्थिक आयाम में पाये जाने वाले अंतरालों को उद्घाटित करना और उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

(1) उन कारणों का अध्ययन करना जो समकालीन भारत में सामाजिक, आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं।

(2) भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली के सामाजिक, आर्थिक आयाम के अधूरेपन के कारण लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

(3) सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में लोकतंत्र की पूर्ण स्थापना के लिए अपनाये जाने वाले उपायों का सूक्ष्म अध्ययन व विश्लेषण करना।

(4) अम्बेडकर द्वारा कल्पित सामाजिक, आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना होने पर एक राष्ट्र व समाज के रूप में भारत में क्या–क्या परिवर्तन होंगे, इसका विस्तृत अध्ययन करना।

5. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य को पूरा करने हेतु विषय से सम्बन्धित अध्ययन सामग्री का संकलन और विश्लेषण में परम्परागत एवं आधुनिक शोध पद्धतियों का प्रयोग के साथ ही साथ ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा इस विषय में तथ्यों के संकलन के लिए उपलबध द्वितीयक स्रोत का प्रयोग किया जायेगा शोध कार्य को करने के लिए पुस्तकालयों, प्रिंटमीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, शोध पत्रिकाओं का भी प्रयोग किया जायेगा। डॉ० अम्बेडकर के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विचारों से सम्बंधित अनेक प्रकाशित, अप्रकाशित कृतियों, दस्तावेजों तथा पत्र–पत्रिकाओं के अलावा उनके द्वारा लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रंथो, लेखों व व्याख्यानों का निष्पक्ष एवं आलोचनात्मक अध्ययन के साथ ही किसी महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकेगा, वस्तुतः मेरा यह अनुसंधान कार्य वैज्ञानिक पद्धतियों के साथ ही परम्परागत पद्धतियों पर आधारित होगा।

Scanned with OKEN Scanner

6. शोध के अपेक्षित परिणाम

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत सामाजिक आर्थिक लोकतंत्र की प्रासंगिकता के अध्ययन के द्वारा हमें लोकतंत्र को उसके सर्वोत्तम व आदर्श रूप में समझने में मदद मिलेगी। साथ ही अम्बेडकर के सामाजिक आर्थिक लोकतंत्र की संकल्पना के अध्ययन के द्वारा (जिसका अभी तक पर्याप्त अध्ययन व शोध नहीं हुआ है, जहाँ तक मेरी जानकारी है) निश्चित रूप से मेरा यह शोध कार्य डॉ0 अम्बेडकर को एक प्रखर सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतक के रुप में और भी दृढता से स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा और उनके विचारों पर केन्द्रित मेरा यह शोध कार्य वास्तविक रूप से उनके निष्पक्ष मूल्यांकन में भी मददगार होगा। लोकतंत्र के सामाजिक आर्थिक आयामों के व्यापक विश्लेषण द्वारा एक समतामूलक व समरस समाज के निर्माण में मदद मिल सकती है, जिससे हम समाज में फैले विभिन्न प्रकार के विरोधाभासों को कम कर सकते हैं। मेरा यह विश्वास है कि प्रस्तुत शोध राजनीति विज्ञान विषय के लिए अत्यधिक महत्त्व पूर्ण साबित होगा। इस शोध कार्य के द्वारा जिसमें लोकतंत्र के सामाजिक व आर्थिक आयामों पर विचार किया गया है, जिससे भारतीय लोकतंत्र को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखने, उसकी कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने व लोकतंत्र को सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय का साधन बनाने के सम्बन्ध में और मदद मिल सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. जाति भेद का उच्छेद (कल्चरल पब्लिशर्स लखनऊ, 1987)
2. अछूत कौन और कैसे ? (लखनऊ 1986)।
3. पूना पैक्ट बनाम गाँधी (बहुजन कल्याण प्रकाशन, लखनऊ 1987) ।
4. कांग्रेस और गाँधी ने अछूतों के लिए क्या किया ? (लखनऊ 1983) ।
5. गाँधीवाद की मीमांसा (लखनऊ 1983)।
6. भारत में जातिवाद (बहुजन कल्याण प्रकाशन, लखनऊ 1983)।
7. अछूतों की विभुक्ति और गाँधी जी (लखनऊ 1983)।
8. धर्मान्तरण का संकल्प (व्याख्यान) (कल्चरल पब्लिशर्स लखनऊ 1985)
9. बाबा साहेब की भविष्यवाणी (बहुजन कल्याण प्रकाशन, लखनऊ)। संसदीय लोकतंत्र, कांग्रेस के तरीके, विदेश नीति पर बाबा साहेब के पाँच भाषण (संकलनकर्ता, चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु)
10. आधुनिक भारत के निर्माता भीमराव अम्बेडकर, डब्लू0 एन0 कुबेर, (प्रकाशन विभाग सूचना औरप्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार दिल्ली, 1981)
11. डॉ० अम्बेडकर, सूर्य नारायण त्रिपाठी, (हिन्दी पॉकेट बुक्स दिल्ली, 1987)
12. भारत की संविधानिक विधि, डी0डी0 बसु, प्रेटिस हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली 1992
13. सर्वजन के प्रेरणा स्त्रोत : डॉ० भीमराव अम्बेडकर, ओकार नाथ मिर : विनय पब्लिकेशन, दिल्ली (2001)
14. डॉ0 बाबासाहब अम्बेडकर, धनंजय कीर, प्रकाशक– हर्ष भटकल द्वारा प्रकाशित पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई 400026, तृतीय पुनर्मुद्रण 2021
15. डॉ0 अम्बेडकर सामाजिक विचार एवं दर्शन, डॉ0 नरेन्द्र जाधव, प्र0 प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 110002, संस्करण 2017
16. भारत का संवैधानिक विकास, (1773 ई0 से 1950 ई0) विवेचनात्मक अध्ययन, मानकि लाल गुप्त, प्रकाशक– एटलांटिक पाब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0 7/22 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, 2015
17. अम्बेडकर की राजनीतिक सोच एवं विचार, लेखक– आशुतोष मुखर्जी, प्र0– रावत प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण–2012

Scanned with OKEN Scanner

18. भीमराव अम्बेडकर और भारतीय लोकतंत्र, लेखक– रमेश चावला, प्र0 रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर 302004, नई दिल्ली–110002
19. गॉधी और अम्बेडकर, गणेश मंत्री, प्रकाशक– प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, संस्करण 2016
20. हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार, लेखक– अरुण पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 10002, संस्करण 2002
21. भारत में संवैधानिक शासन और लोकतंत्र लेखक– अभय प्रताप सिंह, कृष्ण मुरारी प्रकाशक– ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना) 500029, प्र0 2018
22. डॉ0 अम्बेडकर : चिन्तन और विचार, लेखक– डॉ0 राजेन्द्र मोहन भटनागर, प्रकाशक– जगतराम एण्ड संस, गांधी नगर दिल्ली–110032, संस्करण 2017
23. भारत की राजव्यवस्था, लेखक– एम0 लक्ष्मीकांत, पंचम संस्करण प्रकाशक– Mcgyow Hill Education (India) Pvt. Ltd. Channi 6000116 Tamil Nadu, India, Second reprint-2017
24. भारत का संविधान, डॉ0 जय नारायण पाण्डेय, प्रकाशक– सेन्ट्रल लॉ एजेंसी, मोतीलाल नेरू रोड, इलाहाबाद–2, छियालिसवॉं संस्करण 2013
25. भारतीय राजनीतिक चिंतन, लेखक जवाहरलाल द्विवेदी, प्र0 हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, विश्वविद्यालय, दिल्ली–110009
26. संविधान सभा में डॉ0 अम्बेडकर, डॉ0 श्याम सिंह, प्र0 सम्यक् प्रकाशन–नई दिल्ली–110063–08
27. राजनीतिक, सिद्धान्त की रूपरेखा, ओम प्रकाश गाबा, प्र0 सरस्वती प्रिटिंग प्रेस नोएडा–201301, पंचम संस्करण 2001
28. Writing and Speeches of Dr. B.R. Ambedkar (Compilation of 17 volume)

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Ambuj Pandey
Title	Dr. Bhimrao Ambedkar ke Samajik-Aarthik Chintan ka Vishleshnatmaka Adhyayan
Paper/Submission ID	3639748
Submitted by	trivikramtiwari@gmail.com
Submission Date	2025-05-20 16:09:19
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Scanned with OKEN Scanner

DrillBit

DrillBit Similarity Report

0	1	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Mahatama Gandhi Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satna	<1	Student Paper

Scanned with OKEN Scanner